'शहिद-ए-अजम : लक्खीशाह बंजारा' ग्रंथ की समिक्षात्मक भूमिका...

समिक्षाकार : कर्नलजगतारसिंह मुलतानी, चंदीगढ़

'हिंद-ए-रत्न मल्लूकी बंजारन' दस खंडों के कडी मे से पहली कडी है। उसके बाद डॉ. अशोक पवार प्रोफेसर, मा. संचालक, वसंतराव नाईक संशोधन तथा प्रशिक्षण केंद्र तथा बंजारा साहित्य सम्मेंलन नागपूर की अध्यक्षा डॉ. सुनीता राठोड-पवार द्वारा लिखित **'शहिद-ए-आजम : लक्खीशाह बंजारा'** यह पवार दाम्पत्य द्वारा लिखित दुसरे खंडकी महत्वपूर्ण कडी है। जो धनी,दाणी व्यक्तीका व्यक्तीत्व मानवतावादी विचारधारा की निवकी इट है।

पिछले २२ सालों से पवार दाम्पत्य ने बंजारों द्वारा हजारो संदर्भ ग्रंथ जुटाकर संदर्भ ग्रंथ हमारे सामने उजागर करने का ऐतिहासिक पार्श्वभूमी भरा कार्य किया है। धन, दान, न्याय, बलिदान से ओतप्रोत सिंख-बंजारोंका इतिहास खोज निकाला है। भारत वर्ष मे महापुरुषोंने किए गए योगदान को खोज निकालने कार्य हाथ में लिया है। कुल दस खंडो को उन्होने बंजारों स्वर्णिम इतिहास शीर्षक दिया है, जो सही अर्थ में स्वर्णिम ही है।

पहले खंड में उन्होने गोरबंजारों के वंशावली को इ.स. पूर्व ४७२ से खोज निकाला है। तथा उन्होने लगभग २४७२ वर्ष के इतिहास का अध्ययन करके वंशावली को उजागर किया है। जो ऐतिहासिक कार्य शायद ही आजतक कोई भी नहीं कर पाया हो। **'शहिद-ए-आजम: लक्खीशाह बंजारा'** खंड-२ में उन्होने लक्खीशाह बंजारा परिवार और बल्लूनायक बंजारा पवार परिवार के पारिवारिक संबंध, सिखं इतिहास में उनके परिवार का योगदान और शहादतो को उजागर कर वर्षं तिथीके साथ पुरे संदर्भसूची के साथ वर्णित किया है।

डॉ. अशोक पवार खुद बल्लूनायक पवार बंजारा परिवार के वंशज है। उनके अनुसार बंजारा जमाति प्राचीनतम स्वतंत्र जीवन पद्धती जीने वाला प्रकृतीकारक स्वतंत्र धर्म है। उनकी धर्मपत्नी डॉ सुनीता राठोड पवार यह बंजारा जमातिके इतिहासकार बळीराम पाटील राठोड मांडवीकर तथा उनके पुत्र दिवंगत खासदार उत्तमराव राठोड के परिवारसे नाता रखती है! डॉ.सुनिता राठोड का मायका परशुराम नाईक तांडा (बोथ तांडेका तथा मांडवी तांडेका आंतर केवल दस किलोमीटर पर महाराष्ट्र में है!) इसका मतलब उनके इतिहास लेखनकी मुलता अंतर प्रेरणा इतिहासकार कै. बळीराम पाटील के माध्यम से हमे दिखाई देती है।

उसी बंजारोंके प्रकर्तीधर्म के अनुसार प्राकृतिक आचार-विचार और सदाचार बंजारों में आए है। बंजारों के इसी गुणधर्म के आधार पर हिंदू, बौद्ध, जैन, सिखं धर्म भी बंजारों से प्रभावित हुए है। जिसके दाखिले प्राचीन कालसे पण्णी अनाथपिंडक-सार्थ वाहक, तपसु -भल्लीक, मनसुख बंजारा,भगीरथ, बल्लुराय बंजारा, लक्खीशाह बंजारा आदी महान धनी, दानी के उदाहरण डॉ. पवार दाम्पत्य ने संदर्भासहित दिये है। महात्मा गौतम बुद्ध से लेकर कई जैन धर्म गुरू बंजारों के टांडा या कारवान प्रणाली का कौशल्य अध्ययन करने आए थे। उसका उन्होने संदर्भासहित उल्लेख अपने स्वर्णिम इतिहास खंड में किया है।

सिखं धर्म की स्थापना गुरु नानकदेवजी द्वारा १५ वी सदी में की गई थी। गुरू नानक देवजी सिखं धर्म के प्रचार के लिए भारत का दौरा करते थे। ईसवी सन १५०८ में गुरू नानक देवजी अपने पहले उदासी (मिशनरी यात्रा) के लिए गए। ऊस उदासी के दौरान गुरू नानक देवजी भाई ठाकूर दास (गोधू के पिता और लक्खीशाह बंजारा के दादा) के व्यापारी टांडा में रुके थे। तब गुरू के विचारों से प्रभावित होकर भाई ठाकूर 'गुरूके सिखं' बन गए्। सिखं शब्द का अर्थ 'शिष्य' होता है। वहीं से बंजारों के परिवार सिखं गुरू से जुड गए। गोरबंजारों द्वारा सिखं धर्म में किए गए योगदान को डॉ. अशोक पवार जी ने इस खंड में सही तरिकोके साथ शब्दांकित किया है। कमसे कम दो दसक दोन्होने तन,मन,धन जुटाकर करना उतना आसान नहीं है!

गुरू ग्रंथ साहिब में भी बंजारों के संदर्भ में बंजारा मित्रा, बनजकार, वनिजा के रूप में लिखा है। मुझे भी यहा गुरू ग्रंथ साहिब के 'बंजारा' के संदर्भ में शब्द याद आ रहे है।

''साहु हमारा ठाकरु भारा
हम तिस के बणजारे ।।
जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की,
मारि आपे जीवाले ।।''

जिसका अर्थ है, हमारा मालिक बडा शाहूकार हैं और हम उसके बनजारे हैं। जीव और शरीर सब कुछ उसी शाह द्वारा दी हुई पूँजी हैं। शाह का मतलब राजा महाराजाओं को कम लागत मे कर्ज देने वाला शाहुकार। भाई मनसुख बंजारा, बल्लुराय बंजारा पवार, माईदास, बाबा लक्खीशाह बंजारा, हेमा हाडाऊ-हेमचंद्र बंजारा, ऐसे ५२ बिन्हाड विश्वभर लाखों का बेपार पोलंड, हंगेरी आदी विकसित देश वह मे किया करते थे। जिसका जिक्र पवार दांपत्य के पहिले खंड **'हिंन्द-ए-रत्नः मल्लूकी बंजारन'** के लिए भूमिका लिखते हुए जागतिक कीर्ती के अभ्यासक डॉ. गणेश देवीने किया है। जो देशकी ७२० भाषाओं का भारत सरकार की और से अध्ययन कर रहे है। जॉर्ज गिअरसन के बाद वह सबसे बड ऐतिहासिक शोध कार्य है।

लक्खीशाह बंजारा का जन्म ४ जुलाई १५८० को दिल्ली के रायसीना टांडा में हुआ था। लक्खीशाह के दादा ठाकुर और पिता गोधू जी के गुरू नानक देवजी के विचारों के प्रभाव से

प्रभावित होकर गुरू के सिखं बन गए थे। अपने दादा और पिता के कदम पर कदम रखते हुए, लक्खीशाह बंजारा भी गुरुमत से जुड गए। बाबा लक्खीशाह बंजारा गोर बंजारा के बडतीया गोत के है। किसी ने लक्खीशाह का लुबाना होने का दावा भी किया है। गोर बंजारा समाज के अलग-अलग नाम है, जिसमें बनजारा, लुबाना, गावारीआ, बाजीगर नाम शामिल है।

लक्खीशाह बंजारा ने गुरू तेग बहादूर जी के पार्थिव शरीर का दाह संस्कार अपने घर को जलाकर किया था। डॉ. अशोक पवार जी ने इस घटना को कबीर दास जी का दोहा देकर समझाया है। जिससे उनके संशोधन और लेखन कौशल्य का दायरा कितना बडा है, यह महसुस होता है। जब कोई बात हम दिल से बोलते हैं, तो सीधे जाकर वह सुनने वाले के दिल को छूता है। उसी तरह जब हम कुछ दिल से लिखते है, तो वह भी सीधे जाकर पढ़ने वाले के दिल को छूता है। यही दिल को छु लेने वाली बात लेखक डॉ. अशोक पवार जी ने यहा पैदा की है।

लक्खीशाह बंजारा द्वारा गुरू हर राय साहिब जी की सलाह से लोहगढ के किले का निर्माण किया गया था। लक्खीशाह बंजारा, बंजारा समाज के बडतीआ गोत से थे। लक्खीशाह बंजारा के लदेनी (कारवान) के मदद से मुगलो ने सैन्य अभियान में रसद पहुचाने का भी काम किया। जिसकारण लक्खीशाह बंजारा के मुगलो के साथ साथ गुरू के शिष्य होने के कारण, सिखं गुरूओं से भी अच्छे संबंध थे। लक्खीशाह बंजारा १८० गांवो का मालिक था। लक्खीशाह बंजारा आशिया के ही नहीं बल्की दुनिया के अमीर बेपारीओं में से एक थे। इसीकारण सत्रहवी शताब्दी में भारत के जीडीपी का विश्व की जीडीपी में २४.४% हिस्सा था। विश्व की जीडीपी में भारत का ज्यादा योगदान होने का कारण भी लक्खीशाह बंजारा और बल्लूनायक पवार बंजारा जैसे धनिक बेपारी है। यह संशोधकोंका कथन यतार्थ लगता है। जो व्यक्ती विश्व का सबसे बडा लोहगड जैसै किले का निर्माण कर सकता है! वह जमाती देशको धनिक बना शकती है! इसलिये गोर बंजारा रोका भारतवर्ष का इतिहास यह स्वर्णिम है ऐसा हम कह सकते है।

लक्खीशाह बंजारा के साथ साथ इस खंड में लेखक ने बल्लूराय पवार बंजारा परिवार के शहादतो का भी जिक्र किया है। सिखी इतिहास में मैने शहादतो को तो पढा है। लेकिन एक ही परिवार के कितने सदस्यो ने कहा, किस युद्ध में, किसके खिलाफ, किस गुरू के सिखं होने के नाते शहादत दी, इस बात को डॉ. पवार संदर्भो के साथ संशोधन करके सबके सामने लाया है। जो की अतुलनीय कार्य है।

जैसे की मैने उनसे इस खंड के निर्माण कार्य में आने वाली कुछ समस्यां एवं संदर्भो पर बातचीत की तो उन्होने बताया की, सिखी इतिहास बहुत बडा है। उनके अनुसार उन्हने हिंदी, अंग्रेजी सहित कई पंजाबी ग्रंथो का भी अध्ययन किया। लक्खीशाह बंजारा तथा बल्लूनायक पवार बंजारा परिवार के शहादतो का इतिहास एवं वंशावली पाने के लिए उन्होने पंजाब समेत, राजस्थान के कई भागो का दौरा करके भाटो से चर्चा करके शेकडो ग्रंथ के सहारे वंशावली का

निर्माण किया है। इसलिये वह जेम्स-टाडके लिखे गये घुमंतू इतिहास का सपना पूरा करने का कार्य कर रहे है! यह डॉ.गणेश देवी का कथन यहा यथार्थ लगता है।

पवार दाम्पत्य ने बल्लूनायक पवार बंजारा की जो वंशावली सबके सामने रखी है, उसमें ई.स. पूर्व ४७२ के बंजारों के मूलपुरुष धूमराज से लेकर मणिसिंह पवार बंजारा के पोतो तक की वंशावली का इतिहास सामने लाया है। उनके द्वारा दिए गए संदर्भो के अनुसार ई. स. पूर्व ४७२ में मालवा में आदित्य पवार बंजारा ने मालवा में पवार बंजारा वंश की स्थापना की थी। उसी पवार वंश के राजा विक्रमादित्य, संतला पवार, राजा भोज पवार ने मालवा में राज्य किया। जिसका जिक्र संक्षिप्तमे ज्ञानी गर्जा सिने शहीद विलास मे की है। जो पंजाबी भाषा मे लिखित है! दोनों लेखकोंने पंजाबी ,मोडी फारसी, भाषा के क्षेत्र के नही होते हुए भी, उसके संदर्भ को भाषांतरित करवा कर उसे हिंदी मे उतारने का बडा सराहनीय कार्य किया है।

इ. स. १३०५ में जब मालवा के पवार बंजारा का राज्य खिलजी के पास गया, तब पवार बंजारा वंश अपना स्वतंत्र अस्तित्व या राज्य स्थापित करने के लिए निकल पडे थे। लेखक डॉ. अशोक पवार जी ने प्राचीन शिलालेखों के आधारपर मुलतान राज्य में राव मूला के पुत्र बल्लूराय ने राज किया। यह बात सबके सामने लायी है। यह बल्लूराय वही है, जिनका वंश सिखं संप्रदाय के शुरू से ही गुरूसीख बन गया था। बल्लूराय ने गुरू अमरदास, गुरू रामदास, गुरू अर्जुन देव और गुरू हरगोविंद जी के साथ कदम से कदम मिलाकर उन्हे हर संभव मदद की है।

लाहोर में २४ जून १७३४ बल्लूराय पवार बंजारा के वंशज मणिसिंह और परिवार की शहिदी हुई थी। मणिसिंह गुरू गोविंद सिंह के सबसे अच्छे गुरूसिखं (शिष्य) थे। गुरुजी ने मणिसिंह को हरिमंदिर साहिब क रखरखाव, नियंत्रण और पूजा का जिम्मा सौंपा था। मणिसिंह ने गुरूबाणी की नकल उतारने का महान कार्य किया था। मणिसिंह के बेटे, पत्नी, साथीयों, पोतो सहित कई महिलाओं को इस्लाम न कबुलने पर लाहोर में जकरिया खान ने शहिद कर दिया था। जिसमें मणिसिंह को बंद बंद कटवाया गया था। जिसका जिक्र आरदास मे भी किया गया है। बडे गर्व की बात है। यह मणिसिंह लक्खीशाह बंजारा के दामाद थे। मणिसिंह का ब्याह लक्खीशाह की पुत्री माता सीतो से हुआ था। माता सीतो का नाम सिखी इतिहास में माता गुजरी के बाद आता है। माता सीतो के अमृतपान (दीक्षा) के बाद उनका नाम बदलकर माता वसंत कौर रख दिया था। २४ जून १७३४ में माता वसंत कौर की भी शहादत हुई थी।

इस खंड में डॉ. अशोक पवार जी ने लक्खीशाह बंजारा परिवार के ८ और बल्लू नायक पवार बंजारा परिवार के ६४ कूल मिलाकर ७२ शहिदीयों का शोधकार्य किया है। वह भारत के नक्शेपर स्थलपरभी स्थापीत कीया है। लक्खीशाह बंजारा और बल्लूनायक पवार बंजारा में बेपारी नाते के साथ पारिवारिक नाता भी था। बल्लूनायक के पोते मणिसिंह से लक्खीशाह बंजारा की बेटी सीतो ब्याही थी।

पवार दाम्पत्य ने २२ साल के संशोधन के आधारपर लगभग २०० साल के अंतराल में लक्खीशाह बंजारा और बल्लूराय पवार बंजारा परिवारके ७२ से ज्यादा वीर पुत्रो की शहादतो इसिहास लिखकर बंजारों के धनी-दानी-न्यायदानी-बलिदानी योगदान को सबके सामने लाने का कार्य किया है। पवार दाम्पत्य द्वारा लिखे गए, इस सिख-बंजारों के इतिहास की दखल आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लाने का प्रयास हम करने जा रहे है।

गोरबंजारा तथा सिंखोंका गौरवशालीइतिहास उनके व्याख्यानं द्वारा देश विदेश मे आयोजन करके उनके पवित्र कार्य को हम सभी बधाई देते है। तथा दस खंडो का हिंदी भाषा मे किया गया निर्माण वह देश विदेश के अलग अलग भाषा होमे भाषांतरित करवाकर प्रकाशित करणे के दिशा मे भी हम आगे बढना चाहते है! उनके इस स्वर्णिम इतिहास लेखन कार्य की दखल लेकर भारत सरकार द्वारा उन्हे हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा गौरवान्वीत किया जाए, यही सरकार को अनुरोध करता हूँ।

डॉ बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय औरंगाबाद महाराष्ट्र के पालकत्व मे पैठण को संत विद्यापीठ स्थापित किया गया है। ऊस विश्वविद्यालय मे गोर बंजारा का इतिहास का स्वतंत्र बंजारा साहित्य अकादमी का निर्माण कर उसमे इस का संशोधन करने के बारेमे महाराष्ट्र तथा भारत सरकार को अनुरोध करता हुँ। सभी विधालय और विश्विधालय के पुस्तकालय में यह पुस्तक रखनी अनिवार्य है। डॉ अशोक पवार प्रस्तुत विश्वविद्यालय मे वसंतराव नाईक संशोधन व प्रशिक्षण केंद्र के संचालक भी रहे चुके है। कारण स्वतंत्र विभाग स्थापित कर संतपीठ का कार्य हम बडा सकते है।

पवार दाम्पत्य के इस स्वर्णिम इतिहास संशोधन कार्य को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका स्नेहांकित,

कर्नल जगतारसिंह मुलतानी

सेक्रेटरी जनरल ,
इंटरनॅशनल सिंख कॉन्फेंडरेशन,
सेक्टर २८ अ, मध्य मार्ग, चंडीगड
मो. ९८७८११६८७९,